ISSN 2348-2702

APOORV KNOWLEDGE

International Journal of Multidisciplinary Research

June 2015 Vol. I Issue VII

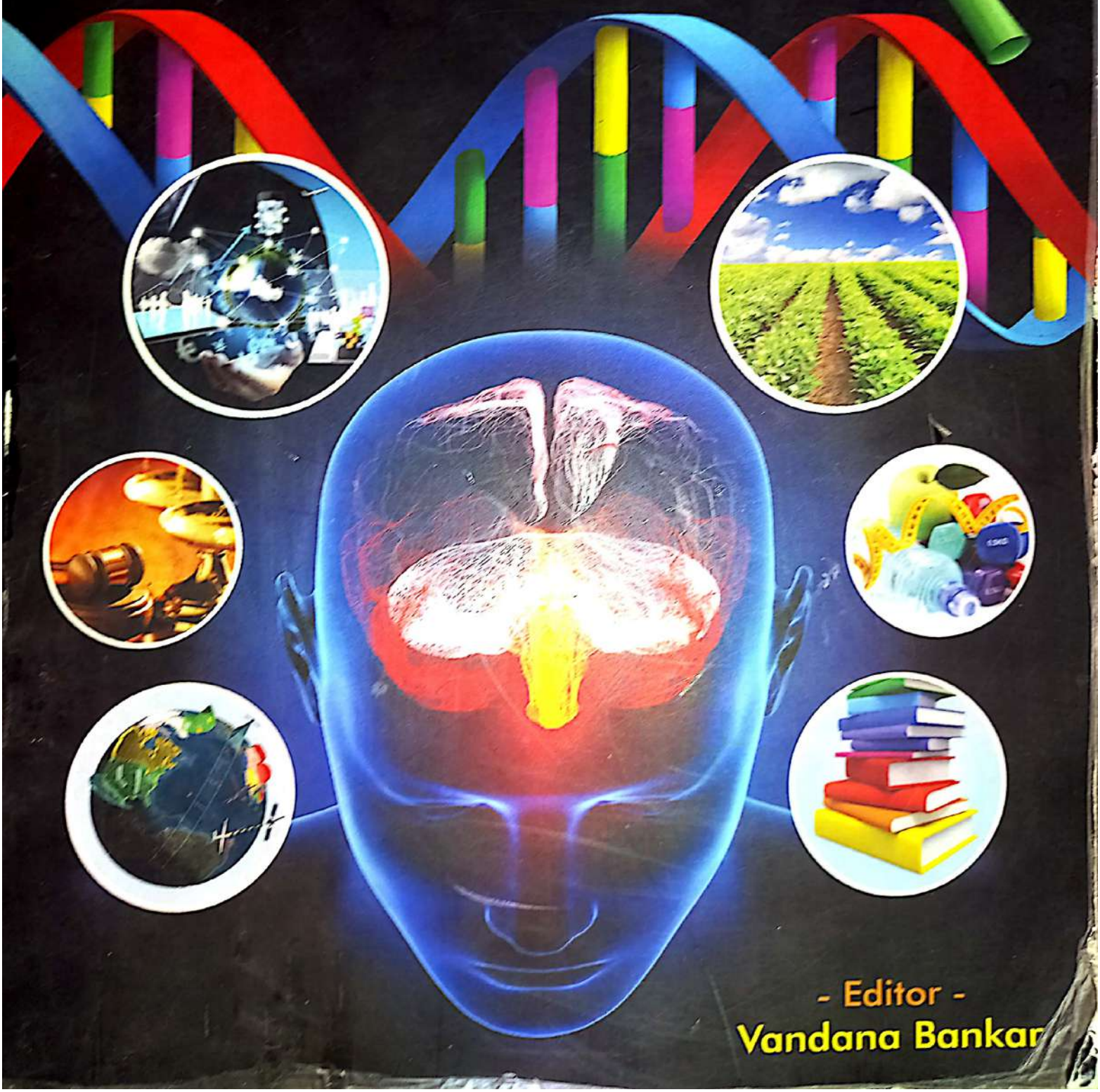

- Editor -
Vandana Bankar

Scanned with OKEN Scanner

ISSN -2348-2702, Vol. - I, Issue - VII

APOORV KNOWLEDGE

International Journal of Multidisciplinary Research

June - 2015 Vol. - I Issue - VII

• EDITOR •
Vandana Namdeo Bankar
Asst. Professor & Head,
Dept. of Home Science,
Dhareshwar Shikshan Sanstha's,
Arts and Science College, Chincholi (Li.)
Tq. Kannad, Dist. Aurangabad, (M.S.) India.

• PUBLISHED BY •
Bharat Sarjerao Jamdhade
Aurangabad
website - www.apoorvkph.com

Scanned with OKEN Scanner

ISSN -2348-2702, Vol. - I, Issue - VII

INDEX

Sr.No.	Topic	Author	Page No.
1.	Comparison of Lipids in bee preferred and non-preferred pollens in Honey Bee.	Dr. Kavita Saini	05
2.	Sustainable Development	Vivek Kumar	09
3.	The Study of Tribal Development In Marathwada	Dr. Wagdao A. R.	15
4.	Globalization and It's Impact on Industrial Development in India	Shaikh Asma Shahin Dr. Ambhore S.S.	18
5.	The Absurdity in 'Catch-22'	Mr. D.K. Hirve	21
6.	उत्तर आधुनिकता और उदय प्रकाश का साहित्य	ज्योति कौशिक	23
7.	सुमित्रानन्दन पंत का प्रकृति-चित्रण	कुमकुम जैन	26
8.	वैश्विकरण में राजभाषा हिंदी	डॉ. मीरा निचळे	30
9.	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और साहित्य	प्रा. डॉ. सोनल रा. नंदनूरवाले	32
10.	जगदीशचंद्र के 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित निम्नवर्गीय नारी	डॉ. यजुवेन्द्र अशोक वनकर	35
11.	चंद्रकांता के साहित्य में व्यक्त सांस्कृतिक जीवन	फोलाने दिलीप सुखदेव	40
12.	कबीर के काव्य में योगमार्ग का दर्शन	सुरवसे राजाभाऊ रावसाहेब	45
13.	दसवें दशक के लघु उपन्यासों का सामाजिक अध्ययन	शेख जब्बार शेख गफुर	48
14	प्रगतीवादी हिंदी कविता	श्री. भाऊसाहेब ना. लहाने	52
15.	मन्नु भंडारी का उपन्यास 'आप का बंटी' में उच्च शिक्षित नारी की मनोव्यथा	नितिन रंगनाथ गायकवाड	54
१६.	स्त्री-भ्रूणहत्या : भारतीय समाजापुढील एक आव्हान	प्रा. मधुकर आत्माराम देसले	५६
१७.	'योग' शास्त्राला आंतरराष्ट्रीय स्तरावर मान्यता	प्रा. डॉ. सुरेश आर. वराडे	६०
१८.	नंदुरबार जिल्ह्यातील सातपुडा पर्वतीय विभागातील पावरा जमातींच्या स्त्रियांची सद्य शैक्षणिक स्थिती-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. आर.एल. भदाणे प्राचार्य डॉ. ए.एस. पैठणे	६६

Scanned with OKEN Scanner

ISSN -2348-2702, Vol. - I, Issue - VII

... मन्नु भंडारी का उपन्यास 'आप का बंटी' में उच्च शिक्षित नारी की मनोव्यथा

नितिन रंगनाथ गायकवाड • पीएच.डी. शोध छात्र, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

हिन्दी साहित्य के स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाओं में प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में सुर्यबाला, उषा प्रियवंदा, दिप्ती खंडेलवाल मालती जोशी, मृदला गर्ग, चित्रा मुदगल इनकें साथ विशेष रूप से मन्नु भंडारी का नाम बडे सम्मान के साथ लिया जा सकता है । मन्नू भंडारीजी ने अपने कथा साहित्य में नारी जीवन का चित्रण तथा उनसे संबंधीत समस्याओं का चित्रण किया है । मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' यह उपन्यास बहूत चर्चित रहा है । 'आपका बंटी' उपन्यास में स्त्री पात्र 'शकुन' के मानसिकता का चित्रण किया गया है । मन्नू भंडारी का यह उपन्यास लेखिका के अनुभवविश्व का महत्वपुर्ण अंग है ।

1979 में लिखा गया इस उपन्यास में उच्च शिक्षित नारी की मनोव्यथा का चित्रण किया गया है । उपन्यास की पात्र शकुन कॉलेज की प्रिंसीपल है जो तलाकशुदा नारी है । इसका मुख्य कारण है अपना इगो तथा पति अजय के साथ एडजस्ट न कर पाना । बंटी तलाखशुदा दाम्पत्य अजय और शकुन का लाडला है जो अपनी मॉ के पास रहकर सोचता है क्या इतने बडे–बडे लोग भी लडते है ? ऐसी लडाई जो कभी खत्म ही न हो । लेखिका ने 'शकुन' की मनोदशा तथा प्रवृत्तीयों का सहज और प्रकृत चित्रण करते हुए उसे ऐसी स्थिति में पहुँचा दिया है की पाठकों की सहानुभूति का अवलम्बन बन जाती है । इस उपन्यास में पति – पत्नी के खोखले रिश्तें के कारण उनके बच्चे को उसके परिणाम भुगतने पडते है । अजय और शकुन एक दुसरें को निचा दिखाने का प्रयत्न करते है । इस बारें में दिलीप मेंहरा कहते है " आपका बंटी की शकुन अजय के अहं से त्रस्त होकर उससे विवाह विच्छेद तो कर लेती है, परंतु फिर अजय को नीचा दिखाने के लिए डॉ. जोशी के साथ विवाह सुत्र में बँधती है । तब वह मानों विवाह सुत्र में नही बँधती, बल्कि पुरूष सत्ता में बँध जाती है क्योंकि दूसरी बार की वैवाहिक असफलता से बचने के लिए वह डॉ. जोशी से कदम–कदम पर समझौता कर लेती है ।"[1]

वर्तमान समय में उच्च शिक्षित नारी पुरूष को पति के रूप में नही बल्की अच्छे मित्र के रूप में अपनाने में इच्छा रखती है जो शकुन के साथ उसका पति इस तरह नही रह पाता । शकुन अपनी नीजि जिंदगी जीना चाहती है । वह कहती है " मुझे कोई एतराज नहीं होगा । सच पुछों तो मै खुद अब यही चाहने लगी थी कि इसे तुम्हारे पास ही भेज दूँ । बहूत रख किया अब कम से कम में अपनी जिन्दगी जिउँ एक परत पर उभरा और उससे भी भीतर की परत पर उभरा अच्छा है, तुम्हारे और मीरा के बीच में भी दरार पडे हर दिन एक परेशानी हर एक तुफान"[2]

उपन्यास की नायिका 'शकुन' उपन्यास की कथावस्तुको गतिमनाणता प्रदान करती है । शकुन के जीवन की त्रासदी यह है की वह सब सुख उपलब्ध होते हुए भी उनसे वंचित होकर अभावों से भरा जीवन यापन करने को विविश है। पति के होते हुए भी नरकिय जीवन की यातना भोगती है और मॉ बनकर भी अपने ही हाथों अपने बेटे की पति के हाथ सौफ कर तिल–तिल दुखों की अग्नी में जलकर विवशता का भार अपनी छाती पर औढे रहती है । अपने इन दुःखों से मुक्ती पाने के लिए ही वह स्वयं को कॉलेज के कार्यो में अत्याधिक व्यस्त रखती है "उसे लगता है की उसके नितान्त घटनाहीन जीवन में मात्र कॉलेज जाना भी एक घटना को ही अहमियत रखता है उसकी अपनी जिन्दगी में ऐसा कुछ भी

Scanned with OKEN Scanner

नही है जो क्षणभर को उत्तेजना पैदा कर सके''[3] दो-तीन साल वह ठहराव का अहेसास महसुस करती रही लेकिन हर बार उसे यह उम्मीद लगी रहती थी की शायद बंटी ही उनके रिश्ते के अनबन को मिटाने के लिए सेतु का काम करेगा परंतु ऐसा नही होता ।

शकुन को लगता है एकदम खाली और खोखली हो गई है । एक अजीब सी बेचैनी महसुस करती है । केवल बेचैनी ही नहीं एक खीज, एक हल्का सा आक्रोश ।

शकुन के दाम्पत्य जीवन में गहरी खाई उत्पन्न करने के लिए उसकी 'स्वाभीमानी वृत्ती' ही उत्तरदायी थी । सात साल से विभागाध्यक्ष हो जाने के पीछे भी कही अपने को बढाने से जादा अजय को गिराने की ही अकांक्षा थी । '' तर्को और बहसों में दिन बीतने थे ठंडी लाशो की तरह लेटे-लेटे दूसरे को दुःखी बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकाक्षा में राते । साथ रहने की यंत्रणा भी बडी बिकट थी और अलगांव का त्रास भी दोनो ही एक-दूसरें की हर बात, हर व्यवहार और हर अदा को एक नया दॉव समझने को मजबुर थे और इस मजबुरी ने दोनों के बीच की दुरी को इतना बढाया की फिर बंटी भी उस खाई को मिटाने के लिए सेतु न बन सक ।''[4]

शकुन के चरित्र द्वारा भारतीय विवाह पध्दती की सार्थकता पर एक प्रश्न चिन्ह सा लगता हुआ प्रतित होता है । शकुन की नियती और जीवन में अपुर्णता मानों घर कर गयी है । अजय से अलग होने के बाद उसने अपना सम्पुर्ण स्त्रीत्व मातृत्व में परिणत कर दिया ।

निष्कर्ष :-

लेखिका मन्नू भंडरीने 'आपका बंटी' इस उपन्यास द्वारा 'शकुन' जैसे नारी पात्र को प्रस्तुत किया है। शकुन एक पढी लिखि नारी होने के बावजूद भी सुख-चैन को प्राप्त नही कर सकी । शकुन दुविधा की शिकार बनी । उसके द्वद्वात्मक स्थिति ही अधुनिकता की स्थिति की शिकार बनने के बाद उसका जीवन अशांती से भर जाता है । इस पात्र द्वारा मन्नूजी ने नारी मनोविज्ञान को व्यक्त करने का प्रयास किया है । शकुन जैसी समाज में इस तरह का जीवन जीने वाली कई नारीयॉ होगी जीनका प्रतिनिधत्व यह पात्र करता है । यह नारी जीवन की मनोव्यथा नही तो और क्या है ?

...✍

संदर्भ

(1) 'मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में मानव जीवन की समस्याओं का निरूपण – डॉ. दिलीप मेहरा पृ स. 101
(2) 'आपका बंटी', मन्नू भंडारी पृ.सं. 136
(3) डॉ. चंद्रकात बादिबडेकर, उद्घृत नन्दिनी मिश्र, 'मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य' पृ. सं. 84
(4) मन्नू भंडारी 'आपका बंढी' पृ. सं. 35,36

Scanned with OKEN Scanner